Volume: 1 Issue: 5 Pages: 14-17
International Journal of Research in Academic World
E-ISSN: 2583-1615
Impact Factor: 3.133
Received: 10/December/2021 Int. J Res. Acad. World. 2022; 1(5):14-17 Accepted: 12/January/2022

प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर अंकित प्रमुख देवी–देवता (कुषाण काल एवं गुप्तकाल के विशेष संदर्भ में)

*[1]रीता दयाल

*[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, महामाया राजकीय महाविद्यालय, कौशाम्बी, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

अतीतकालीन घटनाओं एवं इतिहास की जानकारी प्राप्त करने के लिए इतिहासविद् विभिन्न स्रोतों का सहारा लेते हैं, जिसमें से मुद्राएँ (सिक्के) महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। प्राचीन सिक्के किसी भी काल का इतिहास (राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक) जानने का महत्वपूर्ण साधन होते है। सिक्कों पर प्राप्त विभिन्न धार्मिक तत्व प्रतीक, चिह्न, आकृतियाँ, देवी देवता की मूर्तियाँ विभिन्न कालो में प्रचलित धर्म पर प्रकाश डालती है। हिन्द, यवन, शक, कुषाण, गुप्त काल, के शासकों पर विभिन्न देवी–देवताओं की आकृतियाँ प्राप्त होती है जो तत्कालीन धार्मिक विशेषताओं एवं सांस्कृतिक विकास पर प्रकाश डालती है। इन सिक्कों पर ईरानी देवी–देवता, यूनानी देवी–देवता, एवं भारतीय देवी–देवता का अंकन मिलता है जो भारतीय संस्कृति एवं धर्म की सहिष्णुता एवं समरसता की विशेषता को प्रकट करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में ''प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर अंकित प्रमुख देवी–देवता'' कुषाण काल से गुप्त काल के विशेष संदर्भ में पर प्रकाश डाली गयी है।

मुख्य शब्दः मुद्रा, प्राकृतिक तत्व, यक्ष–यक्षिण, आरदोक्षो, कार्नुकोपिया, पाश, चामर, स्थानक, यूची जाति इत्यादि।

प्रस्तावना

अतीत काल के जन–जीवन, संस्कृति एवं कार्य–कलापों की जानकारी का नाम इतिहास है। किन्तु इतिहासकार जो भी कहता है, बताता है, उसका स्वयं प्रत्यक्षदर्शी नहीं होता बल्कि अतीत से जो भी भौतिक अवशेष उपलब्ध होते हैं उन्ही के अध्ययन के आधार पर अतीत के सम्भावित जीवन और घटनाओं का जो चित्र उभरता है उसी को वह प्रस्तुत करता है। भारत के पुराकालीन इतिहास के निरुपण के लिए जो साक्ष्य आज उपलब्ध है उनमें सिक्के अपना विशेष स्थान रखते हैं। सिक्कों से ज्ञात जानकारी अन्य साक्ष्यों की अपेक्षा अधिक प्रामाणिक होती है। प्राचीन भारतीय सिक्के राजनीतिक आर्थिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण है सिक्के विभिन्न कालों की विभिन्न मान्यताओं एवं धार्मिक विश्वासों की जानकारी भी प्रदान करते हैं। सिक्कों पर अंकित प्रतीकात्मक आकृतियाँ एवं स्त्री–पुरुष आकृतियॉ, देवी–देवताओं की आकृतियाँ उस समय की धार्मिक मान्यताओं पर प्रकाश डालते हैं। भारत की प्राचीनतम् सिक्के आहत सिक्कों को स्वीकार किया गया है इन सिक्को पर धार्मिक तत्व प्रतीक चिह्नों, के रूप में दर्शाए गए है क्योंकि संभवतः प्रारम्भिक चरणो में धर्म को प्रतीकों के माध्यम से दर्शाने की प्रथा विद्यमान रही होगी। आहत सिक्कों पर प्राकृतिक तत्वों सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वायु, जल इत्यादि जो धर्म के प्राथमिक तत्व थे इन्हीं को इन सिक्कों पर अंकित किया गया है। क्रमशः राजतंत्रो के विकास के साथ धर्म का विकास भी हुआ और धर्म के प्रतीकात्मक तत्वों ने मूर्त रूप ग्रहण किया एवं प्रतीकों के स्थान पर विभिन्न देवी–देवताओं एवं धार्मिक तत्वों का अंकन सिक्कों पर प्राप्त होने लगा। विशेष रूप से कुषाण एवं गुप्त काल में धर्म अधिक व्यापक और मूर्त हो गया जब समस्त भारत में मानव आकृति वाले देवी देवताओं की पूजा का प्रचलन प्रारम्भ हो गया। प्रस्तुत शोध पत्र में विशेषतः कुषाण एवं गुप्तकाल की मुद्राओं पर अंकित देवी–देवता विशय पर अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यदि सिक्कों पर देवी–देवताओं के अंकन के प्रारंभ की बात की जायें तो इसक प्रारंभ मुख्य रूप से हिन्द यवन शासकों के काल से दिखाई देता है, हिन्द यवन मुद्राएँ यूनानी शैली में निर्मित है, जो अधिकांशत ताम्र एवं रजत की है, एवं स्वर्ण निर्मित मुद्राएँ कम है। हिन्द यवन मुद्राओं पर यूनानी देवी–देवताओं के साथ–साथ भारतीय देवी देवताओं का भी अंकन मिलता है जैसे इनकी मुद्राओं पर भारतीय देवी–देवताओं का अंकन भी प्राप्त होता है किसी–किसी मुद्रा पर ऐसी नारी आकृतियाँ है जिनकी पहचान यूनानी देवी से नहीं की जा सकती है। कुछ

*Corresponding Author: रीता दयाल

मुद्राशास्त्री इसे यक्षिणी की आकृति स्वीकार करते हैं, अगाथोक्लीज और पेन्टालियन की मुद्राओं पर ऐसी आकृतियाँ देखी जा सकती है। अगाथोक्लीज की मुद्रा पर मूसल लिए संकर्षण एवं चक्र लिए वासुदेव का अंकन मिलता है चूंकि हमारे शोधपत्र का अध्ययन शोध में विशेष रूप से कुषाण एवं गुप्तकालीन मुद्राएं है तो प्रस्तुत शोध में विशेष रूप से इन्हीं काल के शासकों की मुद्राओं पर अंकित देवी देवता का विवरण प्रस्तुत किया जायेगा।

कुषाणः कुषाण जाति यू–ची जाति की एक शाखा थी, जो चीन के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र में निवास करने वाली धुमन्तु जाति थी। द्वितीय शताब्दी ई०पू० के उत्तरार्द्ध में एशिया की दूसरी बर्बर जाति हूणों के आक्रमण के परिणामस्वरूप दक्षिण इली घाटी पहुॅचे इली घाटी से दक्षिण की ओर बढ़ते हुए सीरदरिया, सीरदरिया से तिब्बत होते हुए इनकी एक शाखा (कुई षुआंग) के सरदार क्यू–त्स्यू–क्यू ने अन्य–शाखाओं पर आक्रमण करके सभी को अपने अधीन कर लिया तथा कालान्तर में यही शाखा कुषाण वंश के नाम से प्रसिद्ध हुयी। कुषाण वंश का इतिहास गौरवशाली है जिसका ज्ञान विभिन्न प्राथमिक स्रोतों, साहित्यिक स्रोतों से प्राप्त होता है। कुषाण शासकों ने भारत के बहुत बड़े भू–भाग पर अनेक अल्प प्रचलित धर्मों के विकास में भी योगदान दिया। मानव रूप का अंकन सर्वप्रथम कनिष्क के सिक्कों पर देखा जा सकता है इससे पूर्व इसका अंकन प्रतीकात्मक था। कुषाण वंश का प्रथम शासक कुजुल कदफिस था। कुजुल कदफिस के सिक्कों पर आकृति तथा यूनानी अक्षर में ''हर्मियस तथा दूसरी ओर कुजुल कदफिस लिखा है। विम कडकिस ने स्वर्ण एवं ताँबे की मुद्रा चलवाई जिस पर यूनानी तथा खरोष्ठी लिपि उत्कीर्ण है। कनिश्क विम कडफिस का उत्तराधिकारी था। इसके सोने तथा ताँबे के सिक्के बहुतायत में मिले हैं, इन सिक्कों पर बहुत से यूनानी, भारतीय एवं ईरानी देवी–देवताओं का अंकन है कनिश्क के अतिरिक्त हुविष्क के सिक्के मथुरा से प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुए है, जिन पर हिन्दू, पारसी देवी–देवताओं का अंकन प्राप्त होता है। अतः कुशाण काल में मुद्राओं का प्रचलन प्रचुर मात्रा में हुआ, प्रस्तुत शोध पत्र में हम उन सिक्कों का वर्णन जिन पर देवी–देवताओं का अंकन प्राप्त है। इन सिक्कों को चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, प्रथम श्रेणी के सिक्कों का अंकन ईरानी देवी–देवता से संबन्धित है, द्वितीय श्रेणी में वे सिक्के है जिन पर यूनानी देवी–देवता का अंकन है, तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी में हिन्दू एवं बौद्ध धर्म से संबधित देवी–देवताओं का अंकन आता है।

ईरानी देवता–अथशोः इस देवता का अंकन कनिश्क, हुविश्क दोनों की मुद्राओं पर दर्शनीय है। यह देवता अग्नि से सम्बन्धित प्रतीत होता है। इन राजाओं की मुद्राओं पर अग्नि के ही विभिन्न स्वरूपों के साथ इसका अंकन दृष्टिगोचर होता है। यह जेरोस्ट्रीयन सम्प्रदाय से सम्बन्धित देवता है।

माओः इस देवता का भी अंकन कनिष्क एवं हुविश्क की मुद्राओं पर विभिन्न प्रतीकों के साथ हुआ है। यह ईरानी चन्द्रदेवता है।

मिहिरः यह सूर्य देवता है इसका अंकन हुविश्क की स्वर्ण मुद्रा, कनिष्क की ताम्र मुद्रा पर देखा जाता है। यह यूनानी देवता हेलियॉस के समस्तरीय है मिहिर पर्सियन मिहर का संस्कृत रूप है।

ओयदोः कनिश्क और हुविश्क की ताम्र मुद्राओं पर इस पुरुष देवता का अंकन मिलता है। दाढ़ीयुक्त इस आकृति को अपने खुले बालों के साथ बाएँ की ओर दौड़ते हुए प्रदर्शित किया गया है। वैदिक परम्परा में इसे वायु देवता एवं जेरोस्ट्रीयन में इसे 'वता' के समतुल्य माना जा सकता है।

ओआनिंदोः हुविष्क के सिक्कों पर इस देवी का अंकन पाया जाता है। इसे युद्ध के देवी के रूप में जाना जाता है इसका तादात्म्य अवेस्ता की 'वर्णिदा' तथा जेरोस्ट्रीयन की पेरोथांग के साथ स्थापित किया जाता है।

अहुरमज्दाः कनिष्क की कतिपय स्वर्ण मुद्राओं पर इसका अंकन प्राप्त होता है। यह दो सिर वाले घोड़ों पर सवार के रूप में है तथा हुविष्क सिक्कों पर दाढीं रखे हुए पुरुष आकृति के रूप में 'वोरोमज्दों' लेख के साथ अंकित है, अवेस्ता में इसका वर्णन प्राप्त है, जिसका तादात्मय वैदिक देवता वरुण से स्थापित किया जाता है।

यूनानी देवता

ओरदोक्षोः ओरदोक्षो को धन व सौभाग्य की देवी के रूप में माना गया है। विम कडफिस, हुविष्क तथा बाद के लगभग सभी कुषाण राजाओं के सिक्कों पर इसका अंकन है। इसे भारतीय देवी ''लक्ष्मी'' तथा यूनानी देवी ताइके के समस्तरीय माना गया है। ओरदोक्षों के हाथ में कार्नुकोपिया भारतीय लक्ष्मी के हाथ में कमल का स्मरण दिलाता है।

फैरोः फैरो भी अथसो की भांति अग्नि देव है, जिनका अंकन हुविष्क के सिक्को पर मिलता है।

हेराक्लिजः इस देवता का अंकन कुजुल कडफिसिस की ताम्र मुद्राओं में व्याघ्र चर्म तथा गदा धारण किये हुये है।

नाना शाओः मुद्राओं पर इसके विभिन्न नाम मिलते है नाना शाओ, ननैश्या इत्यादि इसका अंकन कनिष्क और हुविष्क की मुद्राओं पर है। इसके सिर पर प्रभामण्डल एवं हाथ में राजदण्ड है। यह पूरब की अत्यन्त प्राचीन देवी है। असीरिया में 'ईश्वर देवी' के रूप में सीरिया में 'नैनी देवी' तथा पर्सिया में 'नानादेवी' के रूप में पूजित थी।

जियसः कुषाण ताम्र मुद्राओं पर जियस की आकृति का अंकन हुआ है। होमर ने जियस को यूनानी देवमण्डल का प्रमुख देवता बताया है। यह मुख्यतः आकाश देव बताया गया है।

हेलियॉसः कनिष्क की स्वर्ण और रजत मुद्राओं पर इसका अंकन प्राप्त होता है। बैक्ट्रिया के यूनानी राजाओं की मुद्राओं पर हेलियॉस चार घोड़ों वाले रथ की सवारी करते प्रदर्शित है।

सेलेनेः इसका अंकन कनिष्क की मुद्राओं पर मिलता है यह चन्द्र देव है, इसकी आकृति ठीक सूर्यदेव जैसी है, अंतर यह है कि इसमें रश्मियों के स्थान पर पीछे

अर्द्धचन्द्र बना है। होमर ने अपने काव्य में इसको सुन्दर देवी के रूप में प्रदर्षित किया है। जबकि सिक्कों पर यह पुरुष देवता के रूप में प्रदर्शित है। इसके अतिरिक्त अन्य कई यूनानी देवताओं का प्रदर्शन कुषाणों की मुद्राओं पर मिलता है जैसे यूरेनस, टेफैस्टस, आदि।

हिन्दू देवाकृतियाँ

ओयशोः ''ओयशो'' अर्थात शिव इसका अंकन कडफिस दितीय कनिष्क, हुविश्क, वासुदेव की मुद्राओं पर सर्वथा सुलभ है। कुषाण मुद्राओं पर इसके कई रूप दर्शनीय है जैसे फरशा लिए, चतुर्मुख, त्रिमुख, इत्यादि।

ओम्मो देवीः (उमा) सम्प्रति ब्रिटिश संग्रहालय में सुरक्षित हुविश्क की एक मुद्रा जिसे कनिंघम ने 1892 में छनउपेउंजपब बेतवदपबंस में प्रकाशित किया था इसके पृष्ठभाग पर शिव उमा की आकृति है, जिसकी पहचान ''ओम्मों'' अथवा (उमा) से की जाती है।

स्कन्दो तथा कुमारोः इसका अंकन हुविश्क की मुद्राओं पर मिलता है। स्कंदो तथा कुमारो को योद्धा देव कार्तिकेय के रूप में देखा जा सकता है।

बोडोः ''बोडो'' का तादात्म्य बुद्ध से स्थापित किया गया है, बुद्ध का अंकन प्रथम बार कनिष्क के सिक्कों पर मिलता है। बुद्ध का अंकन सौन्दर्य रूप में लम्बे अधोवस्त्र सिरचक्र मस्तक के पीछे प्रभामण्डल तथा कुण्डलयुक्त हुआ है।

इस प्रकार कुषाण सिक्कों पर ईरानी, यूनानी, हिन्दु बौद्ध धर्म से सम्बन्धित देवताओं का अंकन पर्याप्त मात्रा में मिलता है जो कुषाण काल में हिन्दु, बौद्ध के साथ ईरानी एवं यूनानी धर्म के तत्वों को सुनिष्चित करता है।

भारतीय मुद्राषास्त्र के इतिहास में गुप्त सम्राटों की मुद्राएँ एक नए युग का प्रवर्तन करती है। पूर्ववर्ती काल बाख्त्री यवन एवं कुषाण शासकों ने भी कलात्मक मुद्राओं का प्रचलन किया था किन्तु उनमें विदेशी तत्व अधिक थे। उन पर अंकित लिपि भी यूनानी एवं खरोष्ठी थी जबकि गुप्तकालीन लिपि ब्राह्मी, गुप्त सम्राटों की मुद्राएँ आधुनिक मुद्राओं के सन्निकट थी। वे कला बनावट एवं वस्त्राभूषणों की दृष्टि से सर्वथा राष्ट्रीय कहीं जा सकती है। यद्यपि गुप्त सम्राटो ने स्वर्ण, रजत एवं ताम्र इन तीनों धातुओं की मुद्राओं का प्रवर्तन किया किन्तु उनकी स्वर्ण मुद्राएँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। ये मुद्रायें अपनी मौलिकता, कलात्मकता एवं विविधता की दृष्टि से प्राचीन भारतीय मुद्राओं में अप्रतिम है। कुछ मुद्राशात्रियों का अभिमत है कि कुषाण मुद्राओं का प्रभाव गुप्तषासकों की मुद्राओं पर पड़ा है। मौद्रिक साक्ष्यों के अनुशीलन से यह स्पश्टतयः परिलक्षित होता है कि इनका प्रभाव प्रारम्भिक गुप्त सम्राटों पर वर्तमान था। रैप्सन ने अपने ग्रंथ श्प्दकपंद ब्वपदेश में अपना विचार व्यक्त किया है कि ''आर्दोक्षों'' प्रकार की कुषाण मुद्राओं ने किदार कुषाणों एवं शाही गुप्तों की मुद्राओं को प्रभावित किया है। यघपि, कि इसमें संदेह नहीं है कि गुप्त राजवंष की मुद्राओं पर कुषाण मुद्रा का प्रभाव था। जैसे कुषाण सिक्कों पर अंकित देवी आर्दोक्षों का स्थान सिंह वाहिनी 'दुर्गा' तथा कमलासन 'लक्ष्मी' ने लिया। प्रारम्भिक शासक देवी के हाथो में अभी तक कार्नुकोपिया का अंकन करते थे किन्तु कालान्तर में इसके स्थान पर देवी के हाँथ में कमल का अंकन किया गया। वैदेशिक प्रभाव तथा वैदेशिक तत्वों में भारतीयकरण के साथ ही साथ गुप्तकालीन मुद्राओं में मौलिकता मुखरित हुई है।

गुप्त कालीन मुद्राओं पर मुख्य रूप से हिन्दु देवी–देवताओं का विशेषकर लक्ष्मी एवं विष्णु के अंकन मिलते है। जो उस युग में वैश्णव धर्म के प्रभाव को दर्शाते है। सिक्कों पर देवी लक्ष्मी, दुर्गा, विश्णु का वाहन गरुड़, देवी गंगा, वैश्णव धर्म के प्रतीक जैसे शंख, चक्र, गदा, पद्म देखे जा सकते हैं।

लक्ष्मीः गुप्त शासको समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त, तथा लगभग सभी शासकों के सिक्कों पर देवी लक्ष्मी का अंकन बैठी तथा स्थान मुद्रा में प्राप्त हुआ है। इसका अंकन कभी पलंग पर बैठे, कभी कमल पर आसीन, कभी स्थानक मुद्रा में प्रदर्शित किया गया है। देवी के हाथ में कभी कार्नुकोपिया, कभी कमल लिए हुए दिखाया गया है।

सिंह वाहिनी दुर्गाः गुप्त शासकों की मुद्राओं पर सिंहवाहिनी देवी का भी अंकन है जिसे देवी दुर्गा से समीकृत किया गया है। देवी के हाथ मे पाश एवं कार्नकोपिया दिखाया गया है।

मकर वाहिनी गंगाः गुप्त शासकों की मुद्राओं पर मकरवाहिनी गंगा का अंकन प्राप्त होता है। देवी मकर (मगरमच्छ) के ऊपर खड़ी है तथा सम्पूर्ण वस्त्राभूषणों से युक्त है। बॉये हाँथ में कमल तथा दाहिना हाथ खाली है। इसके अतिरिक्त गुप्तशासक स्कन्द गुप्त की रजत मुद्राओं पर कुछ विशेष धर्मिक आकृतियाँ अंकित है। एक सिक्के पर गरूण के स्थान पर नंदी का चित्र मिलता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्राचीन भारतीय मुद्राओं पर अंकित धार्मिक प्रतीक भारत के धार्मिक तत्वों के निरूपण में अत्यंत ही सषक्त भूमिका अदा करते है। हम भलिभाँति कह सकते हैं कि कुषाण एवं गुप्त कालीन सिक्कों पर जिन देवी देवताओं का अंकन मिलता है, ये देवता आज भी भारतीय समाज में पूजे जाते हैं जो भारतीय धर्म की निस्तरता पर प्रकाश डालते हैं।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्राचीन भारतीय मुद्रायें जे.एन. दूबे, प्रतिभा प्रकाशन दिल्ली 2009
2. अर्ली हिस्ट्री ऑफ नार्थ इंडिया, एस0 चट्टोपाध्याय प्रोग्रेसिव पब्लिशर – 1958
3. कुषाणा क्वाइन्स एंड हिस्ट्री, पी0एल0 गुप्ता, एस0 कुलश्रेष्ठा, डी0 के0 प्रिंटवर्ल्ड दिल्ली 1993
4. प्राचीन भारतीय मुद्राएँ, आर0 राव0, पीके0 राव, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली 1998
5. इंडियन न्यूमिस्मेटिक स्टडीज, के0डी0 वाजपेई, अभिनव प्रकाशन न्यू दिल्ली 2004
6. भारतीय सिक्के, वासुदेव उपाध्याय भारतीय भंडार प्रयाग 2005

7. कुषाण न्यूमिस्मेटिक श्रवा सत्य प्रनव प्रकाशन, दिल्ली 1985
8. डाईनस्टिक आर्टस ऑफ द कुशाणज्स, जे0एम0 रोसेनफील्ड यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस – 1967
9. द क्वायनेज ऑफ द गुप्ता एम्पायर्स एस0 अल्तेकर, वाराणसी 1957
10. भारत के पूर्व कालिक सिक्के, पी० एल० गुप्ता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006।